आर्थिक उन्नति का आधार: सोनामुखी "केसिया आंगस्टीफोलिया बहल"

विशेषतायें एवं लाभ:

- यह बहुतायत रूप से आर्युर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथी तथा अन्य चिकित्सकीय पद्धतियों में उपयोगी है।
- पत्तियों तथा फलों का मुख्यत: उपयोग स्नेहक व रेचक की तरह एवं उदर कृमि निकालने में किया जाता है। तथा यह अन्य बीमारियों में जैसे पीलिया, दमा, मलेरिया, बुखार एवं अपच में भी उपयोगी है।
- सनाय का औषधीय तत्व **सेनोसाइड** है जो कि पत्तियों एवं फलियों में पाया जाता है। इसकी मात्र 2-4 प्रतिशत के बीच होती है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- इसे हर प्रकार की मिट्टी यहां तक कि खारी भूमि (जिसकी विद्युत चालकता 4 डेसी सेमेन्स प्रति मी. और जिसका पी.एच. मान 8.5 तक हो, में भी उगाया जा सकता है।

भूमि की तैयारी:

- भूमि को गहरा जोत कर 30 से 60 दिन के लिए छोड़ दिया जाता है, जिससे खरपतवार सूख जाए एवं मिट्टी के कीट मर जाए।
- दूसरी जुताई के दौरान गोबर की खाद 5000 किलो प्रति हेक्टेयर तथा वर्मी कम्पोस्ट अथवा हरी खाद का उपयोग भी किया जा सकता है।
- बीजों द्वारा बिजाई जुलाई से अगस्त के मध्य की जाती है। प्रति हेक्टेयर 5-10 किलो बीजों की आवश्यकता पड़ती है।
- बीजों को छिड़काव पद्धति से अथवा 30 x 30 से.मी. की दूरी पर 1.5 से 2.0 से.मी. की गहराई पर लगाया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण:

- बिजाई के 25-30 दिनों बाद खरपतवार को निकालते रहना चाहिए।

कटाई व संग्रहण:

- सनाय में पत्तियां फसल का प्रमुख उत्पाद हैं, जिसे फूल आने से पहले संग्रहित कर लेना चाहिए।
- फसल 50 से 90 दिनों की होने पर पौधे को जमीन से 3-4 इंच ऊपर से काट लेना चाहिए।
- पहली कटाई के उपरांत अगली कटाई फरवरी में एवं आखिरी कटाई मई में की जाती है।
- कटाई के दौरान मौसम में नमी अथवा बादल नहीं होना चाहिए।
- प्रत्येक कटाई के उपरांत सिंचाई करनी चाहिए।
- बीज प्राप्ति हेतु फसल को मई में काटा जाना चाहिए।
- फसल काटने के उपरांत उनकी छोटी-छोटी ढ़ेरियां लगा दी जानी चाहिए एवं चिकनी सतह पर फैलाकर धूप में सुखाना चाहिए जिससे पौधों में उपस्थित नमी कम हो जाए।
- इसके पश्चात् 7-10 दिनों के लिए पौधों को छाया में सुखा कर तथा पत्तियों को झाड़ कर डंठल व टहनियों से अलग कर लेना चाहिए।

आय:

- सिंचाई एवं अच्छे प्रबंधन के परिणामस्वरुप 15 क्विंटल सूखी पत्तियां एवं 7 क्विंटल फलियां प्रति हेक्टेयर की दर से प्राप्त की जा सकती हैं।
- वर्षा आधारित फसल से 10 क्विंटल पत्तियां एवं 2 क्विंटल बीज प्राप्त होते हैं।
- सूखी पत्तियों एवं बीजों का बाजार मूल्य क्रमश: 10-15 रूपये एवं 30 रूपये प्रति किलो है।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005